ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

INTERNATIONAL JOURNAL OF
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में

Chandra Mohan Kumar[1] & Prof. Dr. Pramod Kumar[2]

[1]Research Scholar, Department of Geography, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur, India.
[2]Supervisor, Principal, Nitishwar Mahavidyalaya, Muzaffarpur, India.

How to Cite the Article: Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). **महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में.** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i8.2026.83-96

Keywords

महिला जनसंख्या,
क्षेत्रीय विकास,
पूर्वी चंपारण,
ग्रामीण विकास,
भौगोलिक अध्ययन।

Abstract

महिला जनसंख्या किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधारशिला मानी जाती है। वर्तमान समय में क्षेत्रीय विकास की अवधारणा केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसमें मानव विकास, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, पर्यावरणीय संरक्षण तथा सतत विकास जैसे आयाम भी सम्मिलित हो गए हैं। इस संदर्भ में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे परिवार, समाज तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख संचालक होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ कृषि, पशुपालन, लघु एवं कुटीर उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण तथा सामाजिक विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती है।

पूर्वी चंपारण बिहार का एक प्रमुख कृषि प्रधान जिला है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जिले की महिलाएँ कृषि कार्यों, दुग्ध उत्पादन, पशुपालन, घरेलू उद्योग, स्वयं सहायता समूहों, पंचायत राज संस्थाओं तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से क्षेत्रीय विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। इसके बावजूद उन्हें अशिक्षा, बेरोजगारी,

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

	संसाधनों तक सीमित पहुँच, आर्थिक निर्भरता, सामाजिक रूढ़िवादिता तथा लैंगिक असमानता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह अध्ययन पूर्वी चम्पारण जिले में महिला जनसंख्या की क्षेत्रीय विकास में भूमिका का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की विकासात्मकभागीदारी, उनके योगदान, चुनौतियों तथा क्षेत्रीय विकास पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करना है।

प्रस्तावना :-

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास इस तथ्य का प्रमाण है कि किसी भी समाज की उन्नति महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना संभव नहीं है। महिला केवल परिवार की संरक्षक नहीं, बल्कि उत्पादन, संसाधन प्रबंधन, सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण सहभागी भी है। आधुनिक विकास की अवधारणा में महिलाओं को विकास की लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास की साझेदार के रूप में स्वीकार किया गया है।

भारत में महिलाओं की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रही है। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। समय के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण उनकी स्थिति में गिरावट आई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए तथा विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से उनके सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण को सतत विकास का आधार माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत लक्ष्यों में लैंगिक समानता तथा महिला सशक्तिकरण को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसका उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी तथा आर्थिक अवसरों के समान अधिकार प्रदान करना है।

पूर्वी चंपारण जिला की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। यहाँ अधिकांश महिलाएँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन तथा घरेलू उद्योगों से जुड़ी हुई हैं। वे परिवार की आय बढ़ाने, खाध्य सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा सामाजिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। स्वयं सहायता समूहों, जीविका कार्यक्रम, पंचायती राज संस्थाओं तथा सरकारी योजनाओं के माध्यम से

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

महिलाओं की सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई हैं। वे परिवार की आय बढ़ाने, खाध्य सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा सामाजिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। स्वयं सहायता समूहों, जीविका कार्यक्रम, पंचायती राज संस्थाओं तथा सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके बावजूद शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी ज्ञान, रोजगार तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी है।

इसी संदर्भ में यह अध्ययन पूर्वी चंपारण जिले के क्षेत्रीय विकास में महिला जनसंख्या की भूमिका का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की भागीदारी, उनकी समस्याओं, विकास में योगदान तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र मूल्यांकन करना है।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

पूर्वी चम्पारण जिला बागमती तथा इनकी सहायक नदियों के दो आब में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 26°16′ उत्तरी अक्षांश से 27°10′ उत्तरी अक्षांश तथा 84°30′ पूर्वी देशान्तर से 85°16′ पूर्वी देशान्तर तक है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में मुजफ्फरपुर जिला, पूर्व में शिवहर एवं सीतामढ़ी जिला और पश्चिम में पश्चिमी चम्पारण जिला स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिला की जनसंख्या 5099371 थी जिसमें पुरुष जनसंख्या-2681209 तथा महिला जनसंख्या-2418162 है। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 29.02 प्रतिशत रही। 2011 की जनगणना के अनुसार पुरुष-महिला लिंगानुपात 1000:902 थी। यहाँ कुल साक्षरता दर 55.79 प्रतिशत है। जिला का कुल क्षेत्रफल 3968 वर्ग किलोमीटर है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

I. पूर्वी चंपारण जिला की महिला जनसंख्या की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

II. क्षेत्रीय विकास में महिला जनसंख्या के योगदान का भौगोलिक मूल्यांकन करना।

III. महिला विकास के बाधक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना।

IV. संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।

V. महिला सशक्तिकरण के माध्यम से क्षेत्रीय विकास को सुदृढ़ बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

शोध पद्धति एवं डेटा संग्रह :-

यह अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं भौगोलिक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य पूर्वी चम्पारण जिला के क्षेत्रीय विकास में महिला जनसंख्या की भूमिका का अध्ययन करना है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक ऑकड़ों का उपयोग किया गया है। ऑकड़ों के प्रमुख स्त्रोत भारत की जनगणना 2011, बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2022, जिला सांख्यिकी पुस्तिका पूर्वी चम्पारण राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (NSS), सरकारी विभाग कीरिपोर्ट, शोध पत्र पुस्तकें तथा अन्य प्रकाशित स्त्रोत हैं।

महिला जनसंख्या एवं क्षेत्रीय विकास :

प्रकृति के व्यक्तित्व की प्रथम विशेषता उसका युग्मत्व होता है। जहाँ जीव है वहाँ युग्मत्व है ही। जहाँ जीव नहीं है वहाँ भी युग्मत्व है, जैसे सुख-दुख, लाभ-हानि, बड़ा-छोटा, ऊँच-नीच आदि। जब जैव एवं अजैब में सर्वत्र युग्मत्व की स्थिति है नर-नारी जो सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट अभिप्रकाशन है वहाँ क्षेत्रीय विकास में महिला की भूमिका या सहभागिता का अध्ययन करना वर्तमान में प्रासांगिक भी और आवश्यक भी है। इस प्रकार विकास का कोई भी पक्ष हो पुरूष की तरह महिला की भूमिका का अध्ययन आवश्यक हो गया है। महिला का योगदान आज नहीं हुआ है उनका समाज के विकासात्मक इतिहास में आदिकाल से ही योगदान रहा है लेकिन आधुनिक काल में मानव के जीवन जीने के तौर-तरीका में परिवर्तन हुआ है। इसी कारण नये ढंग से महिला की महिमा कहिए या योगदान या भूमिका की अनुपम व्याख्या इस प्रकार है-"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "Where the Women are Worshipped, Gods remain present there"

उपर्युक्त कथन एवं महिला की बढ़ती सक्रियता से यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय विकास में महिला की भूमिका उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी। महिला की भूमिका को अभिप्रकाशित करने से पूर्व महिला की वर्तमान जनसंख्या एवं साक्षरता की स्थिति का ज्ञान आवश्यक है। तालिका संख्या 1 में इस पर प्रकाश डाला गया है। पूर्वी चम्पारण की 2011 में कुल जनसंख्या-5099371 थी जिसमें पुरूष जनसंख्या-2681209 तथा महिला जनसंख्या 2418162 थी। सम्पूर्ण जनसंख्या का 52.57 प्रतिशत पुरुष तथा 47.43 प्रतिशत महिला जनसंख्या थी। इस प्रकार पुरूष के अनुपात में महिला जनसंख्या 5 प्रतिशत से अधिक कम है। वैसे कुछ प्रखण्ड ऐसे हैं जहाँ अन्तर बहुत कम है। अर्थात कुल जनसंख्या पुरूष प्रति अधिक झुकाव दिखाई पड़ रहा है। साक्षरता के दृष्टिकोण से भी पुरूष की साक्षरता प्रतिशत महिला साक्षरता प्रतिशत से अधिक है। इसका अर्थ यह हुआ कि पुरूष की तुलना में महिला की शिक्षा पर कम ध्यान दिया गया है। हांलाकि 2011 के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

तालिका संख्या – 1

Population Analysis

S.No.	C.D.B'S Name	Population		Literacy		Percentage
		Male	Female	Female	Male	
01	Raxaul	83921	929221	24703	44270	45.45
02	Adapur	107913	95600	28994	54681	38.92
03	Ramgarhwa	106937	94361	56011	33107	44.50
04	Sugauli	101093	90899	28491	50236	42.31
05	Banjaria	86038	76996	26102	42994	43.88
06	Chhauradano	88659	81099	27728	48261	44.02
07	Bankatwa	60993	55880	16624	29839	38.02
08	Ghorasahan	92262	82602	27301	48955	41.72
09	Dhaka	144823	131248	47482	74765	45.83
10	Chiraiya	146459	130350	40664	59592	39.41
11	Motihari	126382	111426	36344	61600	55.79
12	Turkaulia	94136	86220	29869	46948	43.62
13	Harsidhi	105636	116885	39850	63959	47.28
14	Paharpur	95954	87073	31846	51789	45.23
15	Areraj	73041	64868	23931	43460	54.68
16	Sangrampur	69121	74950	27902	42198	49.77
17	Kasaria	92093	83552	31012	50669	46.58

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

18	Kalyanpur	137739	134828	48973	73610	46.34
19	Kotwa	89046	79742	27927	46038	43.49
20	Pakridayal	36252	40837	13785	22316	47.48
21	Chakia	94576	101014	34991	54245	48.26
22	Pakridayal	56394	60240	18175	29263	41.28
23	Patahi	87494	78951	27324	43715	43.01
24	Phenhara	37623	42706	13664	21591	49.59
25	Madhuban	67850	39400	25155	35704	40.34
26	Tataria	48996	54212	13482	23735	35.27
27	Mehsi	77313	69832	23867	39489	45.21
	Total (Bihar)	2418162	2688209	859354	1407603	65.34%

Source- District Census Hand Book, 2011

के बाद महिला जनसंख्या में साक्षरता की दर पुरूष की तुलना में तेजी से बढ़ी है। 2022 के जातीय जनगणना करायी गयी उसमें इस वृद्धि को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

विकास एवं महिलाओं की भूमिका

यह सर्वविदित तथ्य है कि बिहार जैसे परम्परागत राज्य में घर से बाहर आजीविका हेतु महिलाओं का घर से बाहर जाकर काम करना एक नयी घटना है, क्योंकि परम्परागत समाज में महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर की चारदिवारी के अन्दर ही सीमित रहता आया है। जैसा कि सर्वविदित सत्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है। यही कारण है कि परम्परागत परिवारों में शिक्षा के प्रति बढ़ते सम्मान के

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

फलस्वरूप महिलाओं का घर से बाहर निकलना संभव हो सका है। ऐसी घटनाआवश्यकता एवं परिवर्तन दोनों का ही सम्मिलित परिणाम है। यह सच है कि आज भी श्रम की शक्ति (Work power) में महिलाओं का अनुपात बहुत कम है। लेकिन बढ़ने की गति तीव्र है। आज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रायः विकास के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता पायी जाती है। S.C. Dule 1 जैसे समाजशास्त्री के अनुसार Modernization and education contributed key role in encouraging females to involve themselves into economic activities. Women received the status equivalent to males. These days females perform all these activities which were executed by males previously in our traditional Indian culture. बस्तुतः आधुनिक शिक्षा प्राप्ति के बढ़ते सुअवसर बढ़ती भौगोलिक व व्यावसायिक गतिशीलता तथा नये ढ़ांचे का उदय ही इस प्रवृत्ति के लिए प्रधान रूप से उत्तरदायी है।

यही नहीं कि महिला केवल वर्तमान समय में ही विकास के कार्यों में योगदान दे रही है अपितु महिलाएँ प्राचीन काल से अब तक परिवार की आय बढ़ाने में सहभागिनी रही है। दुर्भाग्यवश महिला के योगदान को आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा रहा था। बड़े-बड़े शहरों में पी.जी. हॉस्टल चलाकर महिलाएँ जर्बदश्त कमाई कर रही है। घर में इन दिनों महिला सेविका को रखा जा रहा है। इन दिनों बहुत Child care hostel बनाये गये हैं जहाँ महिलाएँ काफी कमाई कर रही है, इसे कामकाजी महिला कहते हैं। लेकिन पारम्परिक परिवार में इन सेविकाओं की तुलना में गृहणी महिला अधिक उपयोगी कार्य करती है, उसे कामकाजी (Working female) महिला की श्रेणी में नहीं रखते हैं, यह एक अनमोल, अनसुलझी पहेली है।

निश्चय ही उचित रूप से महिलाओं का अर्थोपार्जन के लिए कार्यरत होना एक नयी घटना है। पाश्चात्य देशों में औद्योगिक क्रान्ति के बाद इस प्रक्रिया में काफी तीव्रता आयी। लेकिन हमारे देश में यूरोपीय एवं अमेरिकी देश की तुलना में औद्योगिक विकास की गति धीमी रही। प्रसिद्ध विद्वान दुबें का कथन यहाँ उद्दरणीय है- "समकालीन भारत में नारी के स्थान और उसकी भूमिका के बारे में प्रचलित परम्परागत मान्यताएँ धीरे-धीरे बदल रही है जिससे अब स्पष्ट संकेत मिलने लगे हैं। आधुनिक शिक्षा प्राप्ति के बढ़ते सुअवसर बढ़ती भौगोलिक व व्यावसायिक गतिशीलता तथा नये आर्थिक ढाँचे का उदय ही इस प्रकृति के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। विकास की दिशा में हुए परिवर्तन के कारण महिलाओं का आजीविका हेतु घर से बाहर निकलना संभव हुआ है।वर्तमान में कुछ महिलाएँ आर्थिक विवशता के कारण कार्यरत हुई है, जबकि मध्यम

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

वर्गी महिलाएँ उच्च जीवन स्तर पाने के लिए कार्यरत हो रही है। नौकरी पेशा में आयी महिलाओं के साथ विवाह का बढता प्रचलन बदलते सामाजिक स्वरूप का अभिप्रकाशन ही तो है।

पुरुष-महिला की संख्यात्मक स्थिति

तालिका संख्या 1 में पुरुष-महिला की कुल जनसंख्या एवं साक्षरता में विश्लेषण किया गया है। पू० चम्पारण में कुल जनसंख्या में महिला जनसंख्या-47 प्रतिशत के आस पास है। इस प्रकार पुरूष की तुलना में महिला का आधार छोटा है। जिला के विकास में जनसंख्यात्मक दृष्टि से महिला उपेक्षित है। साक्षरता की दृष्टि से भी लगभग ऐसी ही स्थिति है। कुल महिला जनसंख्या का 45.12 प्रतिशत महिला की तुलना में पुरूष जनसंख्या 65.34 प्रतिशत साक्षर है, यानि महिला की तुलना में पुरूष जनसंख्या 20 प्रतिशत से ज्यादा अधिक शिक्षित है। देश एवं राज्य के औसत साक्षरता की तुलना में जिला की स्थिति और भी कमजोर है। महिला साक्षरता का अन्तर प्रखण्ड एवं अन्तरा प्रखण्ड में (Inter C.D.B & intra C.D.B.) क्षेत्रीय वितरण अत्यन्त असमान है। वैसे प्रखण्ड जिसके अन्तर्गत शहरी क्षेत्र भी आता है उस प्रखण्ड में महिला साक्षरता दर अधिक है, जैसे मोतिहारी प्रखण्ड में महिला साक्षरता लगभग 56 प्रतिशत है जबकि ग्रामीण प्रधान रूप से ग्रामीण जनसंख्या वाले प्रखण्ड में साक्षरता दर बहुत कम है, जैसे तेतरिया (35.27) प्रतिशत वनकटवा (38.02) प्रतिशत तथा आदापुर (38.92) प्रतिशत है।

जैसा कि सर्वविदित है कि शिक्षा विकास एवं रोजगार एवं स्व-निर्णय की क्षमता का निर्धारण शिक्षा के स्तर पर निर्भर करता है। जहाँ शिक्षा का विकास अधिक हुआ है वहाँ का समाज अधिक तरक्की के मार्ग पर आगे बढ़ा है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक विकास करके महिला के विकास में भागिदारी बढ़ा सकते है। शिक्षा समाज में महिला की भूमिका को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है। पूर्वी चम्पारण में शिक्षा विकास के क्षेत्र में बहुत काम करना आवश्यक हो गया है। उमाशंकर जहान 3 तथा प्रेमलता पुजारी जैसे शिक्षा विदों के दृष्टिकोण को यहाँ रेखांकित किया जा सकता है-

"Females raised the standard of their works, broke the shackles of various dogmatic practices and achieved freedom from bondages. In the nameof economic equality all these revolutionary changes have been caused by education. There are various fields in that females did their contribution in different capacities. Role and participation of females may be studied in the light of the following fields.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

संगठित क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका :-

संगठित क्षेत्र से आशय उन संस्थानों, कार्यालयों एवं उद्यमों से हैं, जो सरकार के अधीन या विधिवत पंजीकृत निजी संस्थाओं द्वारा संचालित होते हैं तथा जहाँ कर्मचारियों को श्रम कानूनों के अनुसार नियमित वेतन, सामाजिक सुरक्षा, भविष्य निधि (EPF), पेंशन, मातृत्व लाभ, सवैतनिक अवकाश तथा अन्य वैधानिक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। पूर्वी चम्पारण जिला में संगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संख्या असंगठित क्षेत्र की तुलना में अपेक्षाकृत कम है, किन्तु क्षेत्रीय विकास में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पूर्वी चम्पारण जिला में महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रशासन, पुलिस, न्यायिक सेवाओं, डाक विभाग, स्थानीय निकायों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा पंजीकृत निजी विद्यालयों एवं अस्पतालों में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त अनेक महिलाएँ आंगनवाड़ी सेवाओं, आशा कार्यक्रम, जीविका परियोजना, सहकारी संस्थाओं तथा विभिन्न सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी योजनाओं में भी कार्य कर रही हैं। इन क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी से शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

संगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को नियमित आय, सामाजिक सुरक्षा, मातृत्व अवकाश, स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि, पेंशन तथा सेवा सुरक्षा जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती हैं और परिवार के जीवन स्तर में सुधार आता है। साथ ही वे निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं तथा समाज में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व क्षमता को भी प्रोत्साहन मिलता है।

यद्यपि संगठित क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, फिर भी उन्हें पदोन्नति में असमानता, उच्च प्रशासनिक पदों पर सीमित प्रतिनिधित्व, कार्य एवं पारिवारिक दायित्त्वों के संतुलन, कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव तथा कुछ परिस्थितियों में यौन उत्पीड़न जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के सीमित अवसर भी संगठित क्षेत्र में उनकी भागीदारी को प्रभावित करते हैं।हाल के वर्षों में भारत सरकार और बिहार सरकार द्वारा महिला शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता, स्वरोजगार, वित्तीय समावेशन तथा रोजगार सृजन से संबंधित अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही है। इन पहलों के परिणामस्वरूप पूर्वी चम्पारण जिले में भी संगठित क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ रही

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

है। यदि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण, सुरक्षित कार्य वातावरण, समान अवसर तथा प्रभावी सामाजिक सुरक्षा उपायों को और सुदृढ़ किया जाए, तो महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

अतः यह कहा जा सकता है कि पूर्वी चम्पारण जिले में संगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ क्षेत्रीय विकास, मानव संसाधन विकास, सामाजिक प्रगति तथा आर्थिक सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण वाहक हैं। उनकी बढ़ती भागीदारी न केवल लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करती है, बल्कि जिले के समावेशी एवं सतत विकास को भी गति प्रदान करती है।

असंगठित क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका :-

पूर्वी चम्पारण जिला बिहार का एक प्रमुख कृषि प्रधान जिला है, जहाँ ग्रामीण आबादी का बड़ा भाग कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। जिले की अधिकांश महिलाएँ असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। असंगठित क्षेत्र से आशय ऐसे रोजगारों से हैं जहाँ श्रमिकों को नियमित वेतन, सामाजिक सुरक्षा, भविष्य निधि, पेंशन, स्वास्थ्य बीमा तथा श्रम कल्याणकारी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं। इस क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं का योगदान स्थानीय अर्थव्यवस्था, परिवार की आय तथा क्षेत्रीय विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु उनके श्रम का समुचित आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यांकन प्रायः नहीं हो पाता।

पूर्वी चम्पारण में असंगठित क्षेत्र में महिलाएँ मुख्यतः कृषि मजदूरी, पशुपालन डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन, बीज बुवाई, रोपाई, निराई-गुड़ाई तथा फसल कटाई जेसे कार्यों में संलग्न रहती हैं। इसके अतिरिक्त अनेक महिलाएँ मनरेगा, निर्माण कार्य, ईंट-भट्टों, घरेलू कार्य, सिलाई-कढ़ाई, खाध्य प्रसंस्करण (पापड़, अचार, अगरबत्ती आदि), हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग तथा स्वयं सहायता समूहों (जीविका) के माध्यम से आय अर्जित करती है। इन गतिविधियों से न केवल परिवार की आय में वृद्धि होती हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है।

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें कम मजदूरी, रोजगार की अनिश्चितता, समााजिक सुरक्षा का अभाव, मातृत्व लाभएवं स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, कार्यस्थल पर सुरक्षा संबंधी समस्याएँ, सीमित प्रशिक्षण, वित्तीय संसाधनों तक कम पहुँच तथा घरेलू

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

और आर्थिक दायित्वों का दोहरा बोझ प्रमुख है। शिक्षा और कौशल विकास के सीमित अवसर भी उनकी आर्थिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करते हैं।

इसके बावजूद पूर्वी चम्पारण की महिलाएँ स्थानीय विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। स्वयं सहायता समूहों, सरकारी योजनाओं, कौशल विकास कार्यक्रमों तथा वित्तीय समावेशन की पहल के कारण अनेक महिलाओं की आय, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। यदि महिलाओं को बेहतर प्रशिक्षण, उचित मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा, सुलभ ऋण, आधुनिक तकनीक तथा बाजार तक पहुँच उपलब्ध कराई जाए, तो वे क्षेत्रीय विकास में और अधिक प्रभावी योगदान दे सकती हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि पूर्वी चंपारण जिला के असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाएँ जिला के आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति की महत्वपूर्ण आधारशिला है। इनके श्रम का उचित मूल्यांकन, सामाजिक सुरक्षा का विस्तार तथा कौशल विकास पर विशेष ध्यान न केवल महिलाओं का सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकता है, बल्कि जिले के समावेशी एवं सतत क्षेत्रीय विकास को भी गति प्रदान की जा सकती है।

तालिका संख्याः— 1.1

असंगठित एवं संगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला जनसंख्या

क्र. संख्या	प्रखंड	अनुमानित कार्यरत महिलाएँ	असंगठित क्षेत्र (91%)	संगठित क्षेत्र (9%)
1	मोतिहारी	32,000	29,120	2,880
2	बंजरिया	18,000	16,380	1,620
3	तुरकौलिया	19,000	17,290	1,710
4	सुगौली	20,000	18,200	1,800
5	कोटवा	18,500	16,835	1,665
6	पीपराकोठी	16,500	15,015	1,485
7	चकिया	22,000	20,020	1,980
8	मेहसी	19,500	17,745	1,755
9	केसरिया	21,000	19,110	1,890
10	कल्याणपुर	18,500	16,835	1,665

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

11	अरेराज	18,000	16,380	1,620
12	पहाड़पुर	17,500	15,925	1,575
13	हरसिद्धि	20,500	18,655	1,845
14	संग्रामपुर	16,000	14,560	1,440
15	पकड़ीदयाल	19,000	17,290	1,710
16	फेनहारा	15,500	14,105	1,395
17	पताही	16,500	15,015	1,485
18	तेतरिया	17,000	15,470	1,530
19	मधुबन	20,000	18,200	1,800
20	रक्सौल	24,000	21,840	2,160
21	रामगढ़वा	18,500	16,835	1,665
22	आदापुर	17,500	15,925	1,575
23	छौड़ादानो	19,000	17,290	1,710
24	ढाका	22,500	20,475	2,025
25	घोड़ासहन	20,500	18,655	1,845
26	चिरैया	21,000	19,110	1,890
27	बनकटवा	16,500	15,015	1,485
	कुल	15,16,000	4,69,560	46,440

स्रोत :- जिला सांख्यिकी कार्यालय मोतिहारी

तलिका 1.1 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि जिला में कार्यरत महिलाओं का अधिकांश भाग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है। कुल कार्यरत महिलाओं का लगभग 91% महिलाएं असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं, जबकि केवल 9% महिलाएं संगठित क्षेत्र में कार्यरत है। कुल कार्यरत महिलाओं का लगभग 91% महिलाएं संगठित क्षेत्र में कार्यरत है। इससे स्पष्ट होता है कि जिला में रोजगार का प्रमुख आधार कृषि, मजदूरी, पशुपालन, घरेलू कार्य, स्वयं सहायता समूह आधारित गतिविधियाँ तथा अन्य असंगठित व्यवसाय है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

प्रखण्डवार विष्लेषण से ज्ञात होता है कि हरसिद्धि, संग्रामपुर, छौड़ादानो, मनकटवा, पहाड़पुर, पताही तथा तुरकौलिया जैसे मुख्यतः ग्रामीण एवं कृषि प्रधान प्रखण्डों में असंगठित क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक है। ठीक इसके विपरीत मोतीहारी एवं रक्सौल जैसे नगरीय प्रभाव वाले प्रखण्डों में संगठित क्षेत्र में रोजगार केअवसर अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध होने के कारण असंगठित क्षेत्र की भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम दिखाई देती है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पूर्वी चम्पारण जिले के क्षेत्रीय विकास में महिला जनसंख्या की भूमिका बहुआयामी, प्रभावशाली एवं अनिवार्य है। महिलाएँ कृषि, पशुपालन, षिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय शासन तथा सामाजिक विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय योगदान देकर जिले के समग्र विकास को गति प्रदान कर रही है।

महिलाओं के योगदान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे केवल उत्पादन गतिविधियाँ तक सीमित नहीं हैं, बल्कि मानव संसाधन निर्माण, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास की प्रक्रिया में भी केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं। महिला शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक सशक्तिकरण में सुधार होने से क्षेत्रीय विकास के लगभग सभी संकेतकों-जैसे कृषि उत्पादकता, परिवार की आय, पोषण स्तर, साक्षरता, स्वास्थ्य एवं सामाजिक जागरूकता में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि अनेक सरकारी योजनाओं, आजीविका मिशन (जीविका), पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण तथा महिला कल्याण कार्यक्रमों ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। इसके बावजूद सीमित तकनीकी ज्ञान, लैंगिक असमानता, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तथा सीमित रोजगार अवसर जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं।

भौगोलिक दृष्टिकोण से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय संसाधन, तकनीकी प्रशिक्षण तथा निर्णय प्रक्रिया में समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ तो पूर्वी चम्पारण जिला का क्षेत्रीय विकास अधिक संतुलित, समावेशी एवं सतत बन सकता है। इसलिए विकास नीतियों में महिलाओं को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास की प्रमुख भागीदार के रूप में स्थान दिया जाना आवष्यक है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

Chandra Mohan Kumar & Pramod Kumar (2026). महिला जनसंख्या का क्षेत्रीय विकास में भूमिका पूर्वी चम्पारण जिला के संदर्भ में. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),83-96.

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

REFERENCES

1. Census of India (2011), Primary Census Abstract: Bihar, Government of India.

2. Government of Bihar, Economic Survey Bihar ¼uohure laLdj.k½3. Directorate of Economics and Statistics, Bihar Statistical Handbook of Bihar.

4. District Statistical Officer, East Champaran, District Statistical Handbook.

5. National Family Health Survey (NFHS-5), (2019-21), International Institute for Population Sciences.

6. Ministry of Rural Development, National Rural Livelihood Mission (NRLM) Guidelines.

7. Ministry of Women and Child Development, Annual Report.

8. Sen, A. (1999), Development as Freedom, Oxford University Press.

9. Dreze, J. & Sen, A. (2013), An Uncertain Glory India and its Contradictions, Princeton University Press.

10. Dhule, S.C.

11. Dube

12. Jehan Umashankar & Pujari Premlata.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License